साहित्य में नारी समाज की सुरक्षाः एक विचार

प्रीति सिंह
सहायक प्राध्यापिका (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद (उ0प्र0)

08

सारांश

पुरुषों की तरह स्त्रियों की अपनी ऐसी कोई निजी जिन्दगी नहीं होती जहाँ अपनी मनोवृत्तियों के साथ वे समय और सम्बन्ध को धता बताकर मनो विहार कर सकें। फिल्म जगत के महानायक 'अमिताभ बच्चन जी' कहते हैं कि मनुष्य की आमदनी और स्त्री की उम्र कभी नहीं पूछनी चाहिए। इसका अर्थ है कि मनुष्य अपने लिए ही नहीं कमाता उसमें सभी का (परिवार) का हिस्सा होता है। महिला कभी अपने लिए जीवित नहीं रहती वह परिवार के लिए जीवित रहती है।

नारी समाज की सृष्टा है बिना नारी के समाज की रचना कल्पना मात्र ही है। समाज की धुरी नारी ही है चाहे उसके रूप, बच्ची से लेकर दादी, नानी आदि तक क्यों न हो?

स्त्री को लेकर भारतीय साहित्य, दर्शन एवं धर्मशास्त्रों में चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है जहाँ स्त्री की सम्पूर्ण सत्ता को भोग्या, अबला, ललना, कामिनी, रमणी आदि विशेषणों के साथ हेय एवं पुरुष–सापेक्ष रूप में चित्रित किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्राचीन एवं मध्ययुगीन सभी रचयिता एवं टीकाकार पुरुष थे। दूसरे, मातृसत्तात्मक व्यवस्था के अपदस्थ होने के बाद से समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विधान रहा है। फलतः स्वाभाविक था कि पुरुष के सन्दर्भ में पुरुष दृष्टि द्वारा स्त्री को देखा जाता। इसलिए पुरुष की श्रेष्ठता सम्मान, स्थान, शक्ति, अधिकार और स्वार्थ की रक्षा के लिए धर्म शास्त्रों ने अपने ऐसे आप्रवचनों, सूत्रों, श्लोकों की रचना की जिन्होंने स्त्रियों के जीवन को अनेक सामाजिक–नैतिक अर्गलाओं में बाँध दिया।[1]

क्या हर औरत मर्द होना चाहती है, कभी नहीं? संवेदनहीन वह होना नहीं चाहती और संवेदनशील पुरुष होने में और भी पीड़ा है। हम औरतों की तरह वह दर्द बाँट नहीं पाता और बिना बाँटे दर्द ना काबिले बर्दाश्त हो जाता है। –मृदुला गर्ग

''जंग अपने से लड़नी है हमें और जीतना भी अपने को ही है। अपनी सबसे बड़ी बाधा हम स्वयं हैं। –रोहिणी अग्रवाल

मृदुला गर्ग अपने वक्तव्य में कहना चाहती है कि प्रत्येक नारी संवेदनशील है। यदि कहीं संवेदनहीनता दिखाई देती है तो पुरुष उसका कारण है। वहीं रोहिणी अग्रवाल कहती हैं कि जंग हमें अपने से लड़नी होती है। अर्थात हम ही किसी भी जीत में बाधक है। अर्थात नारी ही नारी की दुश्मन है।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने छायावादी रुझान से हटकर राष्ट्रप्रेम की एक नई जमीन तोड़ी और खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी। लिखकर नारी का वह रूप उजागर किया जो त्याग कुर्बानी का ही नहीं बल्कि शौर्य का रूप भी है। इसके बाद लम्बी चुप्पी – एक लम्बा अन्तराल। फिर परम्परा से हटकर अमृता प्रीतम की रचनाएँ पंजाबी में आयीं।[2]

आज स्त्रियों का रचना संसार एक व्यापक आयाम ले रहा है। वे केवल अपने घर आँगन में ही सिमट कर नहीं रह जा रही हैं, जैसा कि उन पर आरोप लगाया जाता है। वे आज्ञाकारी पुत्रियाँ, सास, ननद, बहू या उत्पीड़ित बहुएँ या माताएँ अथवा अन्य गुडी–गडी पात्रों तक सीमित नहीं रहतीं बल्कि उनसे बाहर निकलकर बहुआयामी हो रही है। वे जहाँ एक ओर अपना भोगा हुआ सच, निःसंकोच, निडर, बेबाक होकर लिख रही हैं, वहीं वे ही समाज के हर पहलू में हस्तक्षेप और भागीदारी भी करने की ओर अग्रसर हैं। दरअसल जब औरत भोगा हुआ सच लिखती हैं तो उसमें अनुभूति की प्रमाणिकता आती है। पुरुष जब लिखता है तो वह हमदर्दी का लेखन होता है। वह कल्पना का सहारा लेता है पर अनुभूति की ईमानदारी और सच्चाई भोगे हुए सच में ही होती है। उसमें जीवत्तता होती है।[3]

नारी का दूसरा सच भी है जो संवेदनाओं, वायदों कल्पनाओं और समाज में संजोये सपने स्त्री को किस प्रकार जोड़ते और तोड़ते हैं। जीवन के पूर्ण विराम–अल्पविराम आदि के बारे में नन्दिता कुछ खास नहीं जानती है, लेकिन साथ गुजारे क्षण, परस्पर एक–दूसरे को दिए सच्चे झूठे वचन, हाथ में हाथ लेकर प्रेम की खट्टी–मीठी बातों आदि का कोई तो मूल्य होगा? नंदिता की माँ के निधन के बाद, पापा को बहुत अकेलापन लगा होगा। सारी दुनिया में अकेले और साथ में नंदिता की जवाबदारी.....। माँ की विदाई को जीवन का अल्पविराम बनाकर वे आगे निकल गए होंगे और सब कुछ प्रयत्नपूर्वक धीमे–धीमे भूल गए होंगे। लेकिन नंदिता भूलती नहीं है। पापा जी अनाम रिष्ता और गैर जिम्मेदार सम्बन्धों के सदैव विरूद्ध थे।

''आप लोग बगैर शादी किए ही साथ रहोगे?''

''हाँ पापा..... बस ऐसे ही.....''

''गलत? कैसे.....?''

''बेटा प्रत्येक सम्बन्ध प्रत्येक भावना अपने साथ जिम्मेदारियाँ लेकर आती हैं..... ऐसे किसी तलाकशुदा की तरह गैर जिम्मेदारी वाले सम्बन्धों को मैं तो नहीं मानता।''

''लेकिन पापा, मैं उससे प्रेम करती हूँ.....''

''तो शादी कर ले.....''

''लेकिन वह इंकार कर रहा है..... उसे कुछ समय चाहिए।''

''समय? किसलिए?''

''हम दोनों एक–दूसरे को कुछ समझ लें।''

समझने के लिए शर्ते नहीं होती हैं नंदिता। जिस सम्बन्ध की बुनियाद समर्पण होती है, उस सम्बन्ध की शुरूआत ही शक्त ढंग से हो रही है। इसलिए मैं ऐसा मानता हूँ कि यह ठीक नहीं है। फिर जैसी तुम्हारी मर्जी।''[4] 'छाया मत छूना मन' रचना उपन्यास में हिमांशु जोशी ने वसुधा पात्र का विस्तार कुछ इस प्रकार किया। हरिद्वार अभी कुछ पन्द्रह–बीस मील दूर था कि वसुधा ने प्राण त्याग दिये। दुल्हन की जैसे जो साड़ी वसुधा ने अन्तिम दिन पहनने के लिए रख छोड़ी थी, देवेन ने उसके शव पर डाल दी।

आग की गगन चुंबी लपटों की लपलपाती जिह्वाएँ वसुधा की फूल–सी कोमल देह को क्षण भर में चाट गयीं और अन्त में रह गयी केवल मुट्ठी भर राख ।[5]

वर्तमान में विभिन्न रचनाकार इस दिशा में प्रयासरत हैं। इनमें भी महिला रचनाकारों का प्रयास इस क्षेत्र में सराहनीय है। प्रमुख लेखिकाओं में जैसे – गीतांजलि श्री, कृष्णा सोबती, मृणाल पांडेय, कमला प्रसाद, अरूधंति राय, रमणिका गुप्ता, मैत्रेयी पुष्पा, दीप्ति खंडेलवाल नासिरा शर्मा, अमृता प्रीतम, चित्रा मृदुला गर्ग, मालती जोशी, मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, क्षमा शर्मा तथा उषा प्रियंवदा आदि ने अपनी विभिन्न रचनाओं के माध्यम से नारी की विभिन्न समस्याओं को समाज के सामने रखा तथा उनकी अस्मिता तथा अस्तित्व के प्रश्न को साहसपूर्ण ढंग से उठाया। समाज के सामने विभिन्न आदर्श भी उपस्थित किए ताकि नारी भी समाज में सम्मान पूर्वक स्थान प्राप्त कर सके। स्त्री विमर्श की ये लेखिकाएँ श्रमिक वर्ग की स्त्रियों को इस स्त्री विमर्श का अभिन्न अंग मानती हैं। इन रचनाकारों ने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से साहित्य तथा समाज के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रमाणित करते हुए एक विशेष सम्मानीय जगह तो बनायी ही है साथ ही अन्य अनेक नारियों के लिए वे प्रेरणा स्रोत भी हैं।[6]

कमला ने चन्दन से कहा – ''मेरे माँ–बाप एक सेठ के भट्टे पर काम करते थे। वहीं भट्टे पर ही एक झुग्गी में रहते थे हम लोग। मेरा जन्म भी वहीं पर हुआ था। बचपन भी वहीं रेत–मिट्टी में खेलते–कूदते बीता मेरा और वहीं पर उन भेड़ियों ने मेरी इज्जत लूटी और मुझे कहीं का नहीं छोड़ा।[7]

कमला नाम की लड़की के साथ भट्टे के मालिक के द्वारा बलात्कार किया जाता है। पिता को बताने पर भी मजदूर पिता पुलिस विभाग में अपनी शिकायत कराने की चेष्टा करता है परन्तु न्याय के बदले उसे प्रताड़ना और पिटाई मिलती है। समाज में ये कैसी असमानता, अनाचार, अत्याचार है जो अवर्णनीय है।

नारी क्षमताओं से पूर्ण नौ रूपों में खुद को स्थापित करती है। सहनशील, कोमल, शक्ति, अन्नपूर्णा, लक्ष्मी, सशक्त वामंग, बहन, बेटी..... फिर भी अग्नि परीक्षा की तरह उसके अस्तित्व पर विमर्श क्यों? उसकी मनोदशा क्या होती है, क्या कोई आज तक समझ पाया है? आँखें बन्द करने से सत्य बदल जाता है, साँच को आँच नहीं। नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं है। नारी आज भी कितनी भी आगे निकल गयी है। क्या उसको वहीं सम्मान मिल रहा है जो मिलना चाहिए?

नारी सुरक्षा : सरकार और समाज का उत्तरदायित्व : बचपन में पुत्री के रूप में पिता पर आश्रित, युवावस्था में पत्नी के रूप में पति पर आश्रित और वृद्धावस्था में माँ के रूप में पुत्र पर आश्रित रही है परन्तु आज के आधुनिक युग में जहाँ स्त्री आर्थिक रूप से स्वावलम्बी हो चुकी है। शिक्षक स्तर पर हर क्षेत्र में पुरुषों को कड़ी प्रतिस्पर्धा दे रही है परन्तु सम्मान तथा सुरक्षा की दृष्टि से काफी असहाय तथा असहज अवस्था में है। दिन प्रतिदिन स्त्रियों के साथ छेड़छाड़ तथा बलात्कार की घटनाएँ घटती जा रही हैं। 16 दिसम्बर, 2012 के घटित निर्भया काण्ड ने पूरे समाज को विस्मृत कर दिया।

सिर्फ सरकार द्वारा बनाये गये कानूनों से नारी कल्याण सम्भव नहीं, समाज की सोच में बदलाव लाना जरूरी है। साथ ही प्रत्येक महिला का शिक्षित होना भी आवश्यक है। यदि महिला आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो जाती है तो शोषण से काफी हद तक मुक्ति मिल सकती है।

निष्कर्ष

समाज में सुख शान्ति का आधार मंत्र ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'' के अर्थ और आज के युग में इसकी प्रासंगिकता और महानता पर प्रकाश डालते हुए सम्पूर्ण की संस्थापिका डॉ0 शोभा बिजेन्द्र गुप्ता ने कहा है कि माँ होकर सु–संस्कार देने वाली, बहन होकर मित्रता तथा आशीर्वाद देने वाली पत्नी होकर जीवन के हर मोड़ पर दुःख–सुख में साथ देने वाली नारी को समाज में समानता और सुरक्षा न मिलना बहुत शर्म का विषय है। अतः सरकार और सामाजिक संगठन मिलकर इस पर गम्भीरता से कार्य करें।

संदर्भः–

1. रोहिणी अग्रवाल : साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास, पृ0 सं0–11–12
2. रमणिका गुप्ता : स्त्री विमर्श, पृ0 सं0–78
3. रमणिका गुप्ता : स्त्री विमर्श, पृ0 सं0–78–79
4. समकालीन भारतीय साहित्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृ0 सं0–56–57
5. समाजदर्शी शोध पत्रिका : अप्रेल–जून 2015, पृ0 सं0–56–57
6. शोध परिधि : जून–2016 (5), पृ0 सं0–18–19
7. शोध परिधि : दिसम्बर–2016 (6), पृ0 सं0–88–89